फणीश्वर नाथ रेणु

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» फणीश्वर नाथ रेणु का परिचय और साहित्यिक योगदान

प्रश्न 1 (आसान). फणीश्वर नाथ रेणु का जन्म कहाँ हुआ था?
उत्तर – औराही हिंगना, बिहार में।

प्रश्न 2 (आसान). रेणु जी की किसी एक प्रमुख उपन्यास का नाम बताओ।
उत्तर – मैला आँचल।

प्रश्न 3 (मध्यम). रेणु जी को 'आंचलिक उपन्यासकार' क्यों कहा जाता है?
उत्तर – क्योंकि उन्होंने अपनी रचनाओं में किसी विशेष अंचल (क्षेत्र) के जन-जीवन, भाषा, संस्कृति और परिवेश का यथार्थ चित्रण किया है।

प्रश्न 4 (कठिन). फणीश्वर नाथ रेणु के साहित्यिक योगदान पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।
उत्तर – रेणु जी ने हिंदी साहित्य में आंचलिक लेखन को स्थापित किया। उन्होंने ग्रामीण जीवन, लोक-संस्कृति और क्षेत्रीय भाषाओं को साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया। उनके उपन्यास और कहानियाँ गाँव की आत्मा को चित्रित करती हैं और उनकी पहचान एक अप्रतिम आंचलिक उपन्यासकार के रूप में है।

» आंचलिक साहित्य की अवधारणा

प्रश्न 5 (आसान). आंचलिक साहित्य किसे कहते हैं?
उत्तर – वह साहित्य जो किसी विशेष क्षेत्र या अंचल की भाषा, संस्कृति और लोक जीवन पर केंद्रित होता है।

प्रश्न 6 (आसान). 'मैला आँचल' उपन्यास कब प्रकाशित हुआ?
उत्तर – सन् 1954 में।

प्रश्न 7 (मध्यम). 'मैला आँचल' का प्रकाशन हिंदी उपन्यास के लिए क्यों महत्वपूर्ण था?
उत्तर – क्योंकि इसने हिंदी उपन्यास को एक नई दिशा दी और पहली बार किसी अंचल को ही नायक बनाकर, ग्रामीण भारत की भाषा-संस्कृति को केंद्र में लाया।

प्रश्न 8 (कठिन). आंचलिक साहित्य ने कथा-साहित्य में गाँव की भाषा-संस्कृति को केंद्र में कैसे लाया? विस्तार से समझाओ।
उत्तर – आंचलिक साहित्य ने बड़े-बड़े नायक और भारी-भरकम विषयों से हटकर, एक विशिष्ट अंचल के लोकगीत, लोकोक्ति, लोकसंस्कृति और लोकभाषा को सीधे अपनी रचनाओं में प्रयोग किया। इसने ग्रामीण बोलियों और स्थानीय मुहावरों को साहित्य में सम्मानजनक स्थान दिया, जिससे गाँव का जीवन अपनी 'कच्ची और अनगढ़' सच्चाई के साथ सामने आ सका, और उसकी अपनी पहचान स्थापित हुई।

» 'पहलवान की ढोलक' कहानी का परिचय

प्रश्न 9 (आसान). 'पहलवान की ढोलक' के लेखक कौन हैं?
उत्तर – फणीश्वर नाथ रेणु

प्रश्न 10 (आसान). यह कहानी रेणु जी की किस लेखन शैली को दर्शाती है?
उत्तर – आंचलिक लेखन

प्रश्न 11 (मध्यम). कहानी 'पहलवान की ढोलक' में व्यवस्था परिवर्तन का क्या अर्थ है?
उत्तर – व्यवस्था परिवर्तन का अर्थ है पुरानी राजशाही व्यवस्था का खत्म होना और उसकी जगह नई, आधुनिक व्यवस्था का आना। यह सिर्फ राजा बदलने से ज्यादा है, यह पुरानी परंपराओं के खत्म होने का प्रतीक है।

प्रश्न 12 (कठिन). लोक कला और उसके कलाकार के अप्रासंगिक होने की बात कहानी में कैसे सामने आती है?
उत्तर – कहानी में पहलवान की ढोलक एक लोक कला है, जिसे राजा का संरक्षण मिलता था। जब राजा की जगह नया राजकुमार आता है और पुरानी व्यवस्था बदल जाती है, तो पहलवान को मिलने वाला समर्थन खत्म हो जाता है। उसकी कला, उसकी ढोलक, नई व्यवस्था में अपनी जगह नहीं बना पाती और वह धीरे-धीरे 'अप्रासंगिक' यानी बेकार होती जाती है।

» बदलती व्यवस्था और लोक कलाकार

प्रश्न 13 (आसान). 'पहलवान की ढोलक' में कौन-सी व्यवस्था बदलने की बात की गई है?
उत्तर – राजा साहब की जगह नए राजकुमार का आना।

प्रश्न 14 (आसान). नए राजकुमार को लुट्टन की कला कैसी लगती थी?
उत्तर – उन्हें यह गँवारू और अनुपयोगी लगती थी।

प्रश्न 15 (मध्यम). बदलती व्यवस्था से लोक कलाकारों पर क्या असर पड़ता है?
उत्तर – उनकी कला को संरक्षण नहीं मिलता और वे अपनी पहचान खोने लगते हैं।

प्रश्न 16 (कठिन). आपको क्या लगता है, लोक कलाओं को बचाने के लिए हम क्या कर सकते हैं?
उत्तर – हमें उन्हें मंच देना चाहिए, उनका सम्मान करना चाहिए और नई पीढ़ी को उनसे जोड़ना चाहिए।

» गाँव में महामारी का प्रकोप और सन्नाटा

प्रश्न 17 (आसान). गाँव में किन दो मुख्य बीमारियों का प्रकोप था?
उत्तर – गाँव में मलेरिया और हैजे का प्रकोप था।

प्रश्न 18 (आसान). महामारी के कारण गाँव में कैसा माहौल था?
उत्तर – महामारी के कारण गाँव में सन्नाटा, अंधकार और डर का माहौल था।

प्रश्न 19 (मध्यम). महामारी के कारण ग्रामीणों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा था?
उत्तर – महामारी के कारण ग्रामीण इतने भयभीत थे कि वे आपस में बात भी नहीं करते थे और घरों में दुबके रहते थे, जिससे गाँव में उदासी और निष्क्रियता छा गई थी।

प्रश्न 20 (कठिन). महामारी के इस चित्रण का कहानी के मुख्य विषय से क्या संबंध है?
उत्तर – महामारी का यह चित्रण गाँव की दयनीय स्थिति को उजागर करता है, जहाँ एक तरफ प्रकृति का प्रकोप है और दूसरी तरफ व्यवस्था का अभाव। यह लुट्टन पहलवान की ढोलक के महत्व को भी बढ़ाता है, क्योंकि उसकी ढोलक ही इस भयावह सन्नाटे को तोड़कर लोगों में जीने की उम्मीद जगाती है।

» ढोलक की आवाज़ और उसकी संजीवनी शक्ति

प्रश्न 21 (आसान). ढोलक की आवाज़ गाँव में क्या फैला रही थी – डर या उम्मीद?
उत्तर – उम्मीद

प्रश्न 22 (आसान). संजीवनी शक्ति का क्या अर्थ है?
उत्तर – जीवन देने वाली शक्ति

प्रश्न 23 (मध्यम). महामारी के समय ढोलक की धुन 'चट्-धा, गिड़-धा' लोगों को क्या संदेश दे रही थी?
उत्तर – यह धुन लोगों को 'आ जा भिड़ जा!' का संदेश दे रही थी, यानी बीमारी से लड़ने की हिम्मत दे रही थी।

प्रश्न 24 (कठिन). क्या ढोलक की आवाज़ केवल मनोरंजन का साधन थी या उसका कोई गहरा सामाजिक-मनोवैज्ञानिक महत्व भी था? समझाओ।
उत्तर – ढोलक की आवाज़ केवल मनोरंजन का साधन नहीं थी। उसका गहरा सामाजिक-मनोवैज्ञानिक महत्व था क्योंकि वह मृत्यु के भय में जी रहे लोगों को मानसिक सहारा, जीने की प्रेरणा और एकाकीपन से मुक्ति दिलाती थी। यह लोगों के मनोबल को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी।

» लुट्टन सिंह का प्रारंभिक जीवन और पहलवानी की शुरुआत

प्रश्न 25 (आसान). लुट्टन कितने वर्ष की उम्र में अनाथ हो गया था?
उत्तर – 9 वर्ष

प्रश्न 26 (आसान). लुट्टन को किसने पाला-पोसा था?
उत्तर – उसकी विधवा सास ने

प्रश्न 27 (मध्यम). लुट्टन ने पहलवानी क्यों शुरू की थी? उसका मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – लुट्टन ने अपनी सास को गाँव वालों की परेशानियों से बचाने और उनसे बदला लेने के लिए पहलवानी शुरू की थी.

प्रश्न 28 (कठिन). लुट्टन के प्रारंभिक जीवन की चुनौतियों ने उसके व्यक्तित्व को किस प्रकार प्रभावित किया होगा?
उत्तर – लुट्टन के अनाथ होने और उसकी सास पर हुए अत्याचारों ने उसे एक मज़बूत और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति बनाया होगा, जिसमें अन्याय के खिलाफ लड़ने की गहरी भावना थी. इसी से उसमें पहलवानी का जुनून सवार हुआ होगा.

» श्यामनगर के मेले में चाँद सिंह से कुश्ती

प्रश्न 29 (आसान). श्यामनगर के मेले में लुट्टन ने किस पहलवान को चुनौती दी थी?
उत्तर – चाँद सिंह को.

प्रश्न 30 (आसान). चाँद सिंह को किस नाम से पुकारा जाता था?
उत्तर – 'शेर के बच्चे' के नाम से.

प्रश्न 31 (मध्यम). कुश्ती के दौरान दर्शकों और राजा की लुट्टन के प्रति क्या प्रतिक्रिया थी?
उत्तर – शुरुआत में दर्शक उसे पागल कह रहे थे और राजा उसे लड़ने से मना कर रहे थे, लेकिन बाद में उसकी हिम्मत देखकर उसे लड़ने की आज्ञा दी.

प्रश्न 32 (कठिन). लुट्टन की जीत में ढोल ने क्या भूमिका निभाई? समझाओ.
उत्तर – ढोल ने लुट्टन को दाँव-पेंच के इशारे दिए, जैसे 'दाँव काटो' और 'उठा पटक दे!', जिससे उसे सही समय पर सही चाल चलने की प्रेरणा मिली और वह जीत पाया.

» ढोलक की थाप का कुश्ती पर प्रभाव

प्रश्न 33 (आसान). जब ढोलक 'चटाक्-चट्-धा' बजाता था, तो लुट्टन क्या समझता था?
उत्तर – लुट्टन समझता था कि विरोधी को 'उठा पटक दे!'।

प्रश्न 34 (आसान). लुट्टन ढोलक को अपना क्या मानता था?
उत्तर – लुट्टन ढोलक को अपना गुरु मानता था।

प्रश्न 35 (मध्यम). ढोलक की थापों का लुट्टन की कुश्ती पर क्या गहरा प्रभाव पड़ता था?
उत्तर – ढोलक की थापें लुट्टन को कुश्ती में दाँव-पेंच के लिए प्रेरित करती थीं, उसे लड़ने की सही रणनीति बताती थीं और उसका आत्मविश्वास बढ़ाती थीं, जिससे वह सफल होता था।

प्रश्न 36 (कठिन). पहलवान के जीवन में ढोलक की भूमिका को उसके 'अंतिम समय' के संदर्भ में समझाइए।
उत्तर – पहलवान के अंतिम समय में, जब महामारी से पूरा गाँव डर रहा था और उसके बेटे भी बीमार पड़ गए थे, तब भी ढोलक की थापें ही थीं जो मरते हुए गाँववालों और स्वयं उसके बेटों को थोड़ी हिम्मत और सांत्वना देती थीं। 'चटाक्-चट्-धा' जैसी थापें उन्हें अपनी मौत से लड़ने या कम से कम बिना डर के आँखें मूँदने की शक्ति देती थीं। यह सिर्फ़ कुश्ती नहीं, बल्कि जीवन की लड़ाई में भी उसका मार्गदर्शक और साथी बनी रही।

» राज-पहलवान लुट्टन सिंह की प्रसिद्धि और दरबार में जीवन

प्रश्न 37 (आसान). चाँद सिंह को हराने के बाद लुट्टन को क्या नया पद मिला?
उत्तर – राज-पहलवान

प्रश्न 38 (आसान). राजा साहब लुट्टन को किस नाम से पुकारने लगे थे?
उत्तर – लुट्टन सिंह

प्रश्न 39 (मध्यम). राज-पंडितों और मैनेजर साहब को लुट्टन को 'सिंह' कहलाने पर आपत्ति क्यों थी?
उत्तर – उन्हें लुट्टन की जाति से आपत्ति थी, क्योंकि वह क्षत्रिय नहीं था। लेकिन राजा ने कहा कि उसने क्षत्रिय का काम किया है।

प्रश्न 40 (कठिन). लुट्टन की प्रसिद्धि बढ़ने में राजा साहब की 'स्नेह-दृष्टि' का क्या योगदान था? पाठ के आधार पर समझाइए।
उत्तर – राजा साहब की 'स्नेह-दृष्टि' का मतलब था उनका लुट्टन पर भरोसा और उसे पूरा समर्थन देना। इसी वजह से लुट्टन को पौष्टिक भोजन, व्यायाम और दंगल में आगे बढ़ने का मौका मिला। राजा ने उसके साधारण जाति के होने पर भी उसे 'सिंह' नाम दिया, जिससे उसकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई। राजा के इस प्यार और विश्वास ने ही उसकी प्रसिद्धि में चार चाँद लगाए।

» लुट्टन द्वारा अपने बेटों को प्रशिक्षण

प्रश्न 41 (आसान). लुट्टन अपने बेटों को कब कसरत करवाता था?
उत्तर – लुट्टन अपने बेटों को प्रतिदिन सुबह कसरत करवाता था।

प्रश्न 42 (आसान). लुट्टन के अनुसार उसका गुरु कौन था?
उत्तर – लुट्टन के अनुसार उसका गुरु कोई पहलवान नहीं, बल्कि ढोलक थी।

प्रश्न 43 (मध्यम). लुट्टन अपने बेटों को पहलवानी के अलावा और कौन-कौन सी शिक्षा देता था?
उत्तर – लुट्टन उन्हें सांसारिक ज्ञान, दरबार में मालिकों को खुश रखने का तरीका, और कब कैसा व्यवहार करना चाहिए, जैसी बातें भी सिखाता था।

प्रश्न 44 (कठिन). लुट्टन ने अपने बेटों को ढोलक को गुरु मानने की सीख क्यों दी होगी? यह उसके जीवन में ढोलक के महत्व को कैसे दर्शाता है?
उत्तर – लुट्टन ने ढोलक को गुरु मानने की सीख इसलिए दी क्योंकि ढोलक ही उसकी हिम्मत, प्रेरणा और जीत का प्रतीक थी। यह दर्शाता है कि ढोलक सिर्फ एक वाद्ययंत्र नहीं, बल्कि उसके लिए एक मार्गदर्शक शक्ति और जीवन का आधार थी।

» राजकुमार के आगमन और लुट्टन की बेदखली

प्रश्न 45 (आसान). नए राजकुमार कहाँ से वापस आए थे?
उत्तर – विलायत से

प्रश्न 46 (आसान). नए राजकुमार ने दंगल की जगह किस खेल को प्राथमिकता दी?
उत्तर – घोड़े की रेस को

प्रश्न 47 (मध्यम). राजकुमार के आने पर राज्य में क्या बदलाव आए?
उत्तर – राज्य की पुरानी 'शिथिल' व्यवस्था में कई परिवर्तन किए गए, जैसे दंगल की जगह घुड़दौड़ को महत्व दिया गया।

प्रश्न 48 (कठिन). लुट्टन को दरबार से निकालने का मुख्य कारण क्या था? क्या राजकुमार उससे नफरत करता था?
उत्तर – लुट्टन को निकालने का मुख्य कारण राजकुमार की नई व्यवस्था और सोच थी, जिसमें पुरानी पहलवानी और उसके खर्चों के लिए जगह नहीं थी। राजकुमार उससे नफरत नहीं करता था, बल्कि यह बदलते समय और प्राथमिकताओं का परिणाम था।

» गाँव में वापसी और संघर्ष

प्रश्न 49 (आसान). लुट्टन अपने बेटों के साथ दरबार से निकाले जाने के बाद कहाँ लौटा?
उत्तर – अपने गाँव

प्रश्न 50 (आसान). गाँव में लुट्टन ने क्या काम शुरू किया?
उत्तर – कुश्ती सिखाना

प्रश्न 51 (मध्यम). गाँव में लुट्टन को शिष्यों की कमी क्यों महसूस होने लगी?
उत्तर – गाँव के बच्चे गरीब थे और उन्हें भरपेट भोजन नहीं मिलता था, जिससे उनमें कुश्ती सीखने की ताकत नहीं थी।

प्रश्न 52 (कठिन). लुट्टन पहलवान की गाँव में वापसी और उसके संघर्ष को उसकी हार क्यों नहीं माना जा सकता, बल्कि उसकी हिम्मत का प्रतीक क्यों कहा जा सकता है?
उत्तर – लुट्टन की वापसी हार नहीं थी क्योंकि उसने परिस्थितियों के आगे घुटने नहीं टेके। उसने अपनी कला को छोड़ने के बजाय, सीमित संसाधनों के साथ भी उसे गाँव में जीवित रखने की कोशिश की, भले ही उसे गरीबी का सामना करना पड़ा। यह उसकी अटूट हिम्मत और दृढ़ संकल्प को दर्शाता है।

» महामारी का पुनरागमन और व्यक्तिगत त्रासदी

प्रश्न 53 (आसान). गाँव में महामारी किस-किस रूप में आई थी?
उत्तर – अकाल, मलेरिया और हैजा।

प्रश्न 54 (आसान). महामारी के कारण लुट्टन पहलवान के परिवार को क्या नुकसान हुआ?
उत्तर – उसने अपने दोनों बेटों को खो दिया।

प्रश्न 55 (मध्यम). महामारी फैलने के बाद गाँव के सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्यों में क्या अंतर था?
उत्तर – सूर्योदय में लोग एक-दूसरे को ढांढस देते दिखते थे, पर सूर्यास्त के बाद सब अपनी झोपड़ियों में घुस जाते और चुप्पी छा जाती थी, डर के मारे कोई कुछ बोलता नहीं था।

प्रश्न 56 (कठिन). लुट्टन पहलवान की ढोलक की आवाज़ महामारी के दौर में गाँव वालों के लिए क्या महत्व रखती थी? विस्तार से समझाएँ।
उत्तर – लुट्टन की ढोलक की आवाज़ गाँव वालों के लिए एक संजीवनी थी। जब चारों तरफ मौत का सन्नाटा और निराशा थी, तब ढोलक की थाप उन्हें हिम्मत देती थी। बूढ़े, बच्चे, जवान सब में एक नई ऊर्जा आ जाती थी। यह उन्हें मृत्यु के डर से मुक्ति दिलाती थी और लगता था जैसे कोई उनका उत्साह बढ़ा रहा हो। ढोलक ने मरते हुए लोगों को शांति और निर्भयता से मृत्यु का सामना करने की शक्ति दी।

» लुट्टन का अंतिम संघर्ष और मृत्यु

प्रश्न 57 (आसान). महामारी फैलने पर गाँव की क्या स्थिति थी?
उत्तर – गाँव मलेरिया और हैजे से पीड़ित था, लोग डर और सन्नाटे में जी रहे थे, और हर तरफ़ कराहने की आवाज़ें थीं।

प्रश्न 58 (आसान). लुट्टन के बेटों की मृत्यु का उस पर क्या असर हुआ?
उत्तर – बेटों की मृत्यु के बाद भी लुट्टन ने ढोलक बजाना नहीं छोड़ा, बल्कि और ज़्यादा जोश से बजाने लगा, जैसे अपने दुख को ढोलक की थाप में बदल दिया हो।

प्रश्न 59 (मध्यम). लुट्टन की ढोलक गाँव के लिए 'संजीवनी शक्ति' कैसे बनी?
उत्तर – जब गाँव के लोग महामारी से डरकर मौत के मुँह में जा रहे थे, तब लुट्टन की ढोलक की थाप (चट्-धा, गिड़-धा) उन्हें मौत से लड़ने की हिम्मत और प्रेरणा देती थी, जैसे कोई उन्हें ललकार रहा हो।

प्रश्न 60 (कठिन). कहानी के अंत में लुट्टन की मृत्यु लोक-कला और कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने का प्रतीक कैसे है?
उत्तर – राजा के दरबार से निकलने के बाद लुट्टन की कला (पहलवानी और ढोलक) को कोई सम्मान नहीं मिला। उसकी मृत्यु यह दर्शाती है कि बदलती हुई व्यवस्था में लोक-कलाएँ और उनके कलाकार किस तरह हाशिये पर आ जाते हैं, उनकी कद्र खत्म हो जाती है, और वे भूख व बीमारी से हार जाते हैं।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. प्रश्न: फणीश्वर नाथ रेणु को किस रूप में विशेष पहचान मिली?

› हमें यह समझना होगा कि रेणु जी ने अपनी रचनाओं में किसी विशेष क्षेत्र या 'अंचल' को केंद्र में रखा।

› उन्होंने गाँवों की मिट्टी, वहाँ की भाषा, वहाँ के रीति-रिवाजों और लोक-जीवन को बहुत खूबसूरती से चित्रित किया।

› इसी कारण उन्हें 'आंचलिक उपन्यासकार' की उपाधि मिली।

उत्तर – उत्तर: फणीश्वर नाथ रेणु को 'आंचलिक उपन्यासकार' के रूप में विशेष पहचान मिली।

उदाहरण 2. फणीश्वर नाथ रेणु के 'मैला आँचल' ने आंचलिक साहित्य में क्या योगदान दिया?

› समझो 'मैला आँचल' कब प्रकाशित हुआ था – 1954 में।

› पता करो कि उस समय साहित्य में क्या कमियाँ थीं – गाँव का जीवन और बोली-भाषा उपेक्षित थी।

› फिर सोचो 'मैला आँचल' ने क्या बदला – इसने गाँव के पूरे अंचल को, वहाँ की भाषा, संस्कृति, लोक जीवन को उपन्यास का नायक बना दिया।

› समझाओ कि इसने कैसे हिंदी उपन्यास को एक नई दिशा दी और आंचलिकता पर चर्चा शुरू हुई।

› बताओ कि रेणु जी ने कैसे अंचल की समस्याओं को सामने लाकर, शहर-केंद्रित विकास के दौर में ग्रामीण भारत की ओर ध्यान खींचा।

उत्तर – फणीश्वर नाथ रेणु के 'मैला आँचल' (1954) ने हिंदी उपन्यास में आंचलिकता की अवधारणा को स्थापित किया। इसने गाँव की विशिष्ट भाषा, संस्कृति, लोक जीवन और समस्याओं को केंद्रीय विषय बनाकर, 'नायक' की जगह पूरे 'अंचल' को ही उपन्यास का नायक बना दिया। इससे हिंदी साहित्य में गाँव और ग्रामीण भारत की अनदेखी धड़कन को पहचान मिली।

उदाहरण 3. रेणु जी 'पहलवान की ढोलक' कहानी के माध्यम से किन मुख्य विशेषताओं को दर्शाते हैं?

› यह कहानी रेणु जी के आंचलिक लेखन की प्रमुखता को दिखाती है, जहाँ गाँव, अंचल और वहाँ की संस्कृति को सजीवता से प्रस्तुत किया गया है।

› पात्रों और परिवेश का इतना वास्तविक चित्रण कि वे जीवंत लगते हैं।

› यह कहानी व्यवस्था परिवर्तन के साथ-साथ लोक कला और उसके कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने के दर्द को भी उजागर करती है।

› इसमें गद्य में भी संगीत का अनुभव होता है, ढोलक की आवाज़ और पहलवान के क्रियाकलापों का अद्भुत सामंजस्य है।

उत्तर – रेणु जी इस कहानी से अपने आंचलिक लेखन की खूबी, सजीव चित्रण, गद्य में संगीत का प्रवाह और बदलते समय में लोक कला तथा कलाकार के संघर्ष को दर्शाते हैं।

उदाहरण 4. फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी 'पहलवान की ढोलक' में बदलती व्यवस्था लोक कलाकारों को कैसे प्रभावित करती है?

› कहानी के शुरुआती दौर में, राजा साहब लोक कलाओं (जैसे कुश्ती) के संरक्षक थे और उन्होंने लुट्टन पहलवान को अपने दरबार में स्थान दिया था।

› राजा साहब के निधन के बाद, नए राजकुमार ने गद्दी संभाली। वे शिक्षित और आधुनिक विचारों वाले थे।

› नए राजकुमार ने दरबार से कुश्ती और पहलवानों को हटा दिया, क्योंकि उन्हें यह सब अनुपयोगी और खर्चीला लगता था।

› इस व्यवस्था परिवर्तन के कारण लुट्टन पहलवान, जो एक लोक कलाकार था, दरबारी पद खो देता है और उसे गाँव वापस आकर गरीबी में जीवनयापन करना पड़ता है।

› उसकी कला को संरक्षण नहीं मिलता और धीरे-धीरे उसकी प्रासंगिकता खत्म हो जाती है, अंततः वह भूख और बीमारी से मर जाता है।

उत्तर – बदलती व्यवस्था (राजा साहब से राजकुमार का आना) ने लोक कलाकार लुट्टन पहलवान की कला को अप्रासंगिक बना दिया, जिससे उसे उपेक्षा और गरीबी का सामना करना पड़ा।

उदाहरण 5. फणीश्वर नाथ रेणु ने 'पहलवान की ढोलक' कहानी की शुरुआत में गाँव की किस भयावह स्थिति का वर्णन किया है?

› सबसे पहले, कहानी के शुरुआती अंश को याद करें जिसमें गाँव के माहौल का जिक्र है।

› उसमें किन-किन बीमारियों का उल्लेख किया गया है, उन्हें पहचानें।

› इन बीमारियों के फैलने से गाँव पर क्या असर पड़ा, जैसे सन्नाटा, डर, अंधेरा, इन सब बिंदुओं को क्रम से लिखें।

› बताएं कि कैसे यह सब मिलकर गाँव में एक दुखद और भयावह वातावरण बना रहे थे।

उत्तर – फणीश्वर नाथ रेणु ने 'पहलवान की ढोलक' की शुरुआत में गाँव में मलेरिया और हैजे जैसी भयानक महामारियों के प्रकोप का वर्णन किया है। इन बीमारियों के कारण पूरा गाँव मौत के डर से सन्नाटे में डूबा हुआ था। लोग घरों में दुबके हुए थे और चारों ओर केवल अंधेरा और चुप्पी छाई हुई थी। यह स्थिति इतनी भयावह थी कि उसने पूरे गाँव को दुख और भय के माहौल में धकेल दिया था।

उदाहरण 6. कहानी में ढोलक की आवाज़ को 'संजीवनी शक्ति' क्यों कहा गया है?

› पहला कदम है ये समझना कि 'संजीवनी शक्ति' का मतलब क्या है। इसका मतलब है ऐसी शक्ति जो प्राण डाल दे या जीवन दे।

› दूसरा, सोचो गाँव की स्थिति कैसी थी? महामारी फैली थी, लोग डर में जी रहे थे, मृत्यु का तांडव था।

› तीसरा, ऐसे माहौल में ढोलक की आवाज़ क्या कर रही थी? वह लगातार 'चट्-धा, गिड़-धा' की धुन में बजती थी, जिसका मतलब था 'आ जा भिड़ जा!' या 'उठाकर पटक दे!'

› चौथा, यह धुन लोगों को लड़ने की प्रेरणा दे रही थी, उन्हें अकेला महसूस नहीं होने दे रही थी। यह उन्हें बीमारी से लड़ने की हिम्मत और जीवन जीने की आशा दे रही थी।

› तो इसीलिए, क्योंकि यह आवाज़ लोगों के मृतप्राय मन में आशा और लड़ने की शक्ति भर रही थी, इसे 'संजीवनी शक्ति' कहा गया है।

उत्तर – ढोलक की आवाज़ महामारी से त्रस्त गाँव में मृत्यु के भय और निराशा के बीच लोगों को जीने की, लड़ने की हिम्मत और आशा देती थी, इसलिए इसे 'संजीवनी शक्ति' कहा गया है।

उदाहरण 7. लुट्टन सिंह ने पहलवानी क्यों शुरू की और उसके शुरुआती जीवन में कौन-कौन सी चुनौतियां थीं?

› सबसे पहले, लुट्टन 9 साल की उम्र में अनाथ हो गया, यानी उसके माता-पिता नहीं रहे.

› दूसरा, उसकी विधवा सास ने उसे पाला-पोसा, जो खुद एक मुश्किल भरा जीवन जी रही थी.

› तीसरा, गाँव के लोग उसकी सास को बहुत परेशान करते थे और तरह-तरह की तकलीफें देते थे.

› चौथा, इसी बात से परेशान होकर और बदला लेने की भावना से लुट्टन ने कसरत शुरू की और पहलवानी के रास्ते पर चल पड़ा.

उत्तर – लुट्टन सिंह ने अपनी विधवा सास को गाँव वालों की प्रताड़ना से बचाने और बदला लेने के लिए पहलवानी शुरू की, उसका प्रारंभिक जीवन अनाथ और चुनौतीपूर्ण था, जिसमें उसे उसकी सास ने ही पाला.

उदाहरण 8. लुट्टन सिंह ने श्यामनगर के मेले में चाँद सिंह को कैसे चुनौती दी और इस कुश्ती का क्या परिणाम हुआ?

› लुट्टन मेला देखने गया और ढोल की आवाज़ सुनकर जोश में आ गया.

› उसने 'शेर के बच्चे' के नाम से मशहूर चाँद सिंह को चुनौती दे दी, जिससे सब हैरान रह गए.

› राजा साहब और मैनेजर ने उसे मना किया, लेकिन लुट्टन ने हार नहीं मानी और लड़ने की ज़िद की.

› भीड़ में पहले तो लुट्टन को पागल कहा गया, फिर कुछ लोगों ने उसे लड़ने देने की माँग की.

› चाँद सिंह ने शुरू में लुट्टन को ज़ोर से पकड़ा, लेकिन लुट्टन ढोल की थाप से मिले इशारे पर दाँव काटकर बाहर आया.

› उसने अपनी पूरी ताक़त से चाँद सिंह को उठा पटका और 'चित्त' कर दिया.

› इस जीत के बाद लुट्टन राज-पहलवान बन गया और उसकी ख़्याति दूर-दूर तक फैल गई.

उत्तर – लुट्टन सिंह ने अपनी हिम्मत और ढोल के इशारे पर चाँद सिंह को हराकर श्यामनगर के दंगल में जीत हासिल की और राज-पहलवान बन गया.

उदाहरण 9. लुट्टन पहलवान किस ढोल की थाप पर समझ जाता था कि उसे अपने विरोधी को 'चित' करना है?

› ढोलक की हर थाप का एक खास मतलब होता था, जो लुट्टन को बताता था कि कौन-सा दाँव लगाना है।

› कहानी के अनुसार, 'धिना-धिना, धिक-धिना' की थाप का मतलब था 'चित करो, चित करो!'

› जैसे ही लुट्टन यह थाप सुनता, वह अपने विरोधी को चित करने की पूरी कोशिश में लग जाता।

उत्तर – लुट्टन 'धिना-धिना, धिक-धिना' वाली ढोलक की थाप पर समझ जाता था कि उसे विरोधी को 'चित' करना है।

उदाहरण 10. लुट्टन सिंह राज-पहलवान बनने के बाद दरबार में किस प्रकार का जीवन जीता था और उसकी प्रसिद्धि कैसे बढ़ी?

› पहला कदम, चाँद सिंह पर जीत के बाद राजा साहब ने उसे 'लुट्टन सिंह' कहकर पुकारा और राज-पहलवान घोषित किया।

› दूसरा कदम, राजा के संरक्षण में उसे पौष्टिक भोजन और नियमित व्यायाम मिला, जिससे उसका शरीर और भी मज़बूत हो गया।

› तीसरा कदम, उसने काला खाँ जैसे बड़े-बड़े पहलवानों को हराकर अपनी धाक जमाई और उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई।

› चौथा कदम, दरबार में वह एक 'दर्शनीय जीव' बन गया। उसकी हरकतें बच्चों जैसी थीं – मेले में घूमना, हलवाई से डेढ़ सेर रसगुल्ला माँगना, पान खाना, आंखों पर रंगीन चश्मा लगाकर, हाथ में खिलौना नचाते और सीटी बजाते हुए लौटना।

› पाँचवाँ कदम, दंगल में प्रतिद्वंद्वी न मिलने पर वह खुद ही ढोल की आवाज़ पर कसरत करता और बूढ़े राजा को मुस्कुराने पर मजबूर करता था।

उत्तर – चाँद सिंह पर जीत के बाद लुट्टन राज-पहलवान बन गया। राजा के सहयोग से उसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली और उसने कई नामी पहलवानों को हराया। दरबार में वह एक अनोखा और बच्चों जैसा जीवन जीता था, अपनी हरकतों से सबका मनोरंजन करता था।

उदाहरण 11. लुट्टन ने अपने बेटों को ढोलक के प्रति क्या विशेष सीख दी?

› लुट्टन ने बेटों को समझाया कि उनका असली गुरु कोई इंसान पहलवान नहीं, बल्कि यही ढोलक है।

› उसने बताया कि ढोलक की आवाज़ से ही उसे पहलवानी मिली है।

› उसने अपने बेटों को दंगल में उतरने से पहले सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करने की शिक्षा दी।

उत्तर – लुट्टन ने अपने बेटों को ढोलक को ही अपना असली गुरु मानने और दंगल में उतरने से पहले उसे प्रणाम करने की विशेष सीख दी।

उदाहरण 12. पाठ के अनुसार, नए राजकुमार के आगमन के बाद लुट्टन की स्थिति में क्या मुख्य परिवर्तन आया?

› सबसे पहले, हमें यह याद रखना होगा कि पुराने राजा लुट्टन को बहुत पसंद करते थे और उसकी पहलवानी को सहारा देते थे।

› पुराने राजा की मृत्यु के बाद, उनके बेटे, यानी नए राजकुमार विलायत (विदेश) से वापस आए।

› राजकुमार ने आते ही राज्य की पुरानी व्यवस्था में कई बदलाव किए, क्योंकि उन्हें पुरानी चीजें 'शिथिल' यानी ढीली-ढाली लगती थीं।

› इन बदलावों में से एक था दंगल की जगह घोड़े की रेस को महत्व देना।

› जब राजकुमार और उनके मैनेजर को लुट्टन और उसके बेटों के खाने का खर्च बताया गया, तो उन्होंने इसे 'टेरिबल' और 'हॉरिबल' बताया।

› इसी कारण से, लुट्टन को सीधे तौर पर दरबार से निकाल दिया गया और उसे अपनी बात कहने का मौका भी नहीं मिला।

उत्तर – नए राजकुमार के आगमन के बाद लुट्टन को राज-दरबार से बेदखल कर दिया गया, क्योंकि राजकुमार ने पुरानी व्यवस्था को बदलकर दंगल की जगह घुड़दौड़ को महत्व दिया और लुट्टन के खर्चे को अनावश्यक समझा।

उदाहरण 13. राजदरबार से निकाले जाने के बाद लुट्टन ने अपने गाँव में क्या किया और उसे किस मुख्य चुनौती का सामना करना पड़ा?

› राजदरबार से निकाले जाने के बाद लुट्टन ढोलक लेकर अपने दोनों बेटों के साथ गाँव लौट आया।

› गाँव वालों ने उसे रहने के लिए झोंपड़ी दी और खाने-पीने का खर्च भी उठाया।

› लुट्टन ने गाँव के नौजवानों और चरवाहों को कुश्ती सिखाना शुरू किया।

› मुख्य चुनौती यह थी कि गाँव के बच्चे गरीब थे, उन्हें भरपेट खाना नहीं मिलता था, जिससे वे कुश्ती नहीं सीख पाते थे और धीरे-धीरे शिष्यों की संख्या कम होने लगी।

उत्तर – राजदरबार से बेदखल होने पर लुट्टन अपने गाँव लौट आया और वहाँ बच्चों को कुश्ती सिखाने लगा। उसे मुख्य रूप से गरीबी के कारण शिष्य न मिलने की चुनौती का सामना करना पड़ा।

उदाहरण 14. लुट्टन पहलवान के जीवन में महामारी का क्या प्रभाव पड़ा और उसने अपने बेटों के देहांत के बावजूद क्या किया?

› पहला प्रभाव: अकाल, मलेरिया और हैजे के कारण गाँव में भयंकर मौतें होने लगीं। हर तरफ निराशा और मातम का माहौल था।

› दूसरा प्रभाव: इस भयानक बीमारी ने लुट्टन के जीवन पर सबसे बड़ा वज्रपात किया - उसके दोनों जवान बेटों को छीन लिया।

› बेटों के देहांत के बावजूद: लुट्टन ने अपनी ढोलक बजाना नहीं छोड़ा। उसने अपने बेटों को 'बहादुर' कहकर नदी में बहाया और फिर भी रात भर ढोलक बजाई।

› परिणाम: उसकी ढोलक की आवाज़ गाँव वालों के लिए संजीवनी बन गई, जिससे उन्हें जीने की हिम्मत मिलती रही।

उत्तर – महामारी ने गाँव को पूरी तरह तबाह कर दिया, और लुट्टन ने अपने दोनों बेटों को खो दिया। इस व्यक्तिगत त्रासदी के बावजूद, लुट्टन ने अपनी ढोलक बजाना जारी रखा, जो गाँव के मरते हुए लोगों में हिम्मत और संजीवनी शक्ति भरती रही।

उदाहरण 15. लुट्टन पहलवान ने अपने जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी का सामना कैसे किया और ऐसे समय में उसकी ढोलक ने क्या भूमिका निभाई?

› गाँव में भयानक महामारी फैलती है, जिससे लोग मरने लगते हैं।

› लुट्टन के दोनों जवान बेटे इस महामारी की चपेट में आ जाते हैं और उसकी आँखों के सामने मर जाते हैं।

› बेटों को खोने के बाद भी लुट्टन ढोलक बजाना नहीं छोड़ता, बल्कि उसकी ढोलक की आवाज़ और तेज़ हो जाती है।

› रात के सन्नाटे में, जब गाँव के लोग डर और बीमारी से काँप रहे होते हैं, तब लुट्टन की ढोलक उन्हें जीने की हिम्मत देती है।

› ढोलक की आवाज़ से गाँव वाले मौत से लड़ने की प्रेरणा पाते हैं, जैसे ढोलक उनसे कहती हो 'आ जा भिड़ जा'।

› एक रात अचानक ढोलक की आवाज़ बंद हो जाती है।

› सुबह गाँव वालों को पता चलता है कि लुट्टन भी मर गया है, और उसके शरीर को चिता पर लिटाने से पहले ढोलक बजाई जाती है।

उत्तर – लुट्टन ने बेटों की मृत्यु और महामारी का सामना अपनी ढोलक के माध्यम से किया। उसकी ढोलक ने न सिर्फ़ उसे हिम्मत दी, बल्कि पूरे गाँव के लिए आशा और संघर्ष का प्रतीक बन गई, जब तक उसकी खुद की मृत्यु नहीं हो गई।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• फणीश्वर नाथ रेणु के जीवन परिचय और उनके आंचलिक उपन्यासकार वाली पहचान पर आधारित प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में पूछे जाते हैं, इसे अच्छे से याद कर लेना।

• यह कहानी बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें लोक कला, आंचलिकता और व्यवस्था परिवर्तन जैसे गहरे विषय छिपे हैं, इसलिए कहानी के सार और उसके संदेश पर विशेष ध्यान दें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें आप 'भारत' पर 'इंडिया' के छा जाने वाले विचार को जोड़कर उत्तर को और प्रभावी बना सकते हैं, क्योंकि यह कहानी आधुनिकता के कारण लोक संस्कृति के हाशिए पर जाने को दर्शाती है।

• यह कहानी का आधार है, इसलिए लुट्टन के बचपन और पहलवानी शुरू करने के कारणों को अच्छे से समझ लेना, अक्सर इस पर प्रश्न आते हैं.

• यह प्रसंग पहलवान की ढोलक कहानी का महत्वपूर्ण मोड़ है, इसके पात्रों की विशेषताओं और लुट्टन की जीत के कारणों पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं.

• यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है कि चाँद सिंह पर जीत के बाद लुट्टन के जीवन में क्या बदलाव आए। उसके शारीरिक विकास, प्रसिद्धि और दरबार में उसके अनोखे व्यवहार पर ध्यान देना।

• यह अंश लुट्टन के चरित्र की दृढ़ता और अपने बेटों के प्रति उसके प्रेम को दर्शाता है। इससे जुड़े प्रश्न अक्सर लुट्टन के जीवन मूल्यों और उसके गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित होते हैं।

• यह घटना पाठ का एक महत्वपूर्ण मोड़ है। बोर्ड परीक्षा में राजकुमार के आगमन और लुट्टन की बेदखली के कारणों तथा उसके परिणामों पर प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

• इस हिस्से से अक्सर लुट्टन की मानसिक स्थिति और उसके संघर्ष के कारणों पर आधारित प्रश्न आते हैं, खासकर उसके बेटों की भूमिका पर ध्यान देना।

• यह कहानी लोक-कला और बदलती व्यवस्था के बीच के संघर्ष को दर्शाती है। बोर्ड परीक्षा में इस पहलू पर प्रश्न अक्सर आते हैं, तो इस पर खास ध्यान देना।

एक नज़र में रिवीज़न

› फणीश्वर नाथ रेणु: आंचलिक उपन्यासकार, जन्म बिहार, 'मैला आँचल' प्रमुख रचना।

› रेणु की 'पहलवान की ढोलक': आंचलिकता, लोक कला का संघर्ष, व्यवस्था परिवर्तन.

› व्यवस्था परिवर्तन से लोक कला/कलाकार की उपेक्षा और अप्रासंगिकता।

› लुट्टन 9 वर्ष में अनाथ, सास ने पाला, बदला लेने पहलवानी शुरू.

› लुट्टन ने श्यामनगर मेले में चाँद सिंह को हराकर राज-पहलवान बना.

› चाँद सिंह पर जीत राज-पहलवान प्रसिद्धि दरबार में बच्चों-सा व्यवहार।

› लुट्टन ने बेटों को पहलवान बनाया, ढोलक को गुरु मानने की सीख दी।

› राजा की मृत्यु, राजकुमार का आगमन, लुट्टन की राज-दरबार से बेदखली।

› दरबार से गाँव वापसी; कुश्ती सिखाने का प्रयास; गरीबी, महामारी से शिष्य कम।

› बेटों की मृत्यु के बाद भी ढोलक से गाँव को हिम्मत; लुट्टन की अंतिम साँस तक संघर्ष।